Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महाभारत युद्ध नीति का समीक्षात्मक अध्ययन : महिला योद्धाओं की भूमिका और उनकी युद्ध नीति

डॉ. बाल कृष्ण प्रजापति* दुर्गेश लता भगत**

* सहा. प्राध्यापक (संस्कृत) शासकीय एस.जी.एस.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंज बसौदा, जिला विदिशा (म.प्र.) भारत
** सहा. प्राध्यापक (संस्कृत) प .रा .राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय कॉलेज, इटावा (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना और शोध की आवश्यकता – भारतीय संस्कृति में महाभारत का स्थान अनुपम है। यह केवल एक महाकाव्य नहीं बल्कि एक ऐसा दर्पण है, जिसमें उस समय के राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक और धार्मिक जीवन की झलक मिलती है। महाभारत को 'पञ्चम वेद' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें मानव जीवन के हर पहलू का सूक्ष्म वर्णन है। इसमें कुरुक्षेत्र का युद्ध केवल साम्राज्य की प्राप्ति का संघर्ष न होकर धर्म और अधर्म, न्याय और अन्याय तथा नीति और कूटनीति की टकराहट का प्रतीक है।

महाभारत की सबसे विशेष बात यह है कि इसमें युद्ध नीति (Military Strategy) का इतना विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन है जो उस समय की सैन्य व्यवस्थाओं की परिपक्वता को दर्शाता है। भीष्म, द्रोण, कर्ण, अश्वत्थामा, अर्जुन, भीम आदि को ही युद्ध के महानायक के रूप में देखा जाता है। किंतु जब गहराई से अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं ने भी युद्ध नीति में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इतिहास लेखन की परंपरा पुरुष-प्रधान रही है, इस कारण महिला योद्धाओं की भूमिका अक्सर उपेक्षित रही। आधुनिक शोध दृष्टिकोण यह अपेक्षा करता है कि महाभारत जैसे महाग्रंथों में महिलाओं के योगदान को भी गंभीरता से अध्ययन किया जाए। युद्ध नीति का समीक्षात्मक अध्ययन तभी पूर्ण होगा जब उसमें महिला पात्रों के योगदान का सम्यक मूल्यांकन किया जाए। इस दृष्टि से यह शोध अत्यंत प्रासंगिक है।

महाभारत युद्ध नीति का स्वरूप और विशेषताएँ – महाभारत में युद्ध नीति का स्वरूप अत्यंत व्यापक और जटिल है। यह केवल शस्त्रों और बल का प्रयोग नहीं बल्कि रणनीति, मनोविज्ञान, धर्म और कूटनीति का संगम है।

युद्ध की विशेषताओं में सबसे पहले व्यूह-रचना आती है। चक्रव्यूह, गरुड़व्यूह, मकरव्यूह, पद्मव्यूह आदि अनेक प्रकार की व्यूह-व्यवस्थाएँ महाभारत में वर्णित हैं। प्रत्येक व्यूह का अपना सामरिक महत्व था और उसे भेदने या बनाए रखने के लिए विशेष रणनीति की आवश्यकता पड़ती थी। युद्ध नीति में 'धर्मयुद्ध' की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। युद्ध को केवल विजय या पराजय तक सीमित न मानकर उसे धर्म की स्थापना का साधन माना गया। यही कारण है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता में यह उपदेश दिया कि धर्म के लिए युद्ध करना उसका कर्तव्य है।

महाभारत की युद्ध नीति में निम्नलिखित प्रमुख तत्व पाए जाते हैं –

1. **धर्म और नीति का संतुलन –** युद्ध केवल शक्ति प्रदर्शन नहीं बल्कि धर्म की रक्षा हेतु।
2. **मनोवैज्ञानिक युद्ध –** सैनिकों का उत्साह बनाए रखना और शत्रु के मनोबल को तोड़ना।
3. **कूटनीति और छल –** समय-समय पर छल और राजनीति का प्रयोग भी आवश्यक माना गया।
4. **संधि और संवाद –** युद्ध से पूर्व शांति-स्थापना के प्रयासों को प्राथमिकता।

इन सबमें महिला पात्रों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान था। उन्होंने युद्ध की दिशा तय करने, प्रेरणा देने और नैतिक आधार प्रदान करने का कार्य किया।

द्रौपदी का रणनीतिक व नैतिक योगदान – महाभारत में द्रौपदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि कहा जाए कि कुरुक्षेत्र युद्ध की जड़ द्रौपदी के अपमान में है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

द्रौपदी का सबसे बड़ा योगदान युद्ध के लिए नैतिक आधार तैयार करना था। द्यूतसभा में उसका अपमान पांडवों के लिए सहन न करने योग्य था। द्रौपदी ने प्रतिज्ञा ली कि जब तक दुर्योधन और दुशासन का वध न होगा तब तक वह अपने केश नहीं बांधेंगी। यही प्रतिज्ञा पांडवों के लिए युद्ध का सबसे बड़ा प्रेरणास्त्रोत बनी।

द्रौपदी ने भीम को यह शपथ दिलाई कि वह दुशासन का रक्त पिये बिना शांत नहीं होंगे। भीम का यह क्रोध और द्रौपदी का यह संकल्प युद्धभूमि में बार-बार स्मरण कराया जाता रहा। इस प्रकार द्रौपदी प्रत्यक्ष रूप से रणभूमि में नहीं उतरी, परंतु उनकी प्रतिज्ञा और संकल्प ने युद्ध की रणनीति को ऊर्जा दी।

उनकी भूमिका मनोवैज्ञानिक युद्ध की थी। उन्होंने पांडवों को हर समय यह स्मरण कराया कि यह युद्ध केवल राज्य पाने का साधन नहीं बल्कि धर्म और नारी सम्मान की रक्षा का माध्यम है। इस दृष्टि से द्रौपदी महाभारत की सबसे प्रभावशाली महिला योद्धा कही जा सकती हैं।

कुंती की राजनीतिक और युद्ध नीति संबंधी भूमिका – कुंती का योगदान युद्ध नीति में प्रत्यक्ष युद्ध से अलग लेकिन अत्यंत निर्णायक था। वे पांडवों की माता होने के साथ-साथ उनकी मार्गदर्शक भी थीं।

कुंती ने पांडवों को सदैव एकता में रहने की शिक्षा दी। जब अर्जुन द्रौपदी को स्वयंवर से लाए तो कुंती ने अनजाने में कहा – 'जो लाए हो, सब मिलकर बाँट लो।' यह कथन सामाजिक दृष्टि से विवादास्पद हो सकता है,

किंतु राजनीतिक और युद्ध नीति की दृष्टि से यह अत्यंत दूरदर्शी था। इससे पांडवों में आंतरिक कलह की संभावना समाप्त हो गई और वे एकजुट होकर कौरवों का सामना करने लगे।

कुंती ने अपने पुत्रों को धर्म और नीति की राह पर चलने के लिए निरंतर प्रेरित किया। उन्होंने युद्ध के समय भी पांडवों को यह स्मरण कराया कि उनका उद्देश्य केवल बदला लेना नहीं बल्कि धर्म की स्थापना करना है।

कुंती का योगदान इस बात में है कि उन्होंने पांडवों के मनोबल को सदैव ऊँचा रखा और उन्हें रणनीतिक दृष्टि से एकसूत्र में बाँध दिया।

सुभद्रा, अभिमन्यु और नारी का परोक्ष प्रभाव – सुभद्रा का प्रत्यक्ष युद्ध में योगदान कम था, किंतु उन्होंने परोक्ष रूप से युद्ध नीति को प्रभावित किया। गर्भावस्था में अर्जुन ने सुभद्रा को चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान सुनाया। यद्यपि सुभद्रा बीच में सो गई, फिर भी गर्भस्थ अभिमन्यु ने आधा ज्ञान ग्रहण कर लिया। यही ज्ञान बाद में कुरुक्षेत्र में उसकी वीरता का कारण बना।

अभिमन्यु का चक्रव्यूह में प्रवेश और वीरतापूर्वक लड़ाई महाभारत युद्ध का महत्वपूर्ण अध्याय है। यह सुभद्रा की परोक्ष भूमिका का परिणाम था।

इसके अतिरिक्त सुभद्रा ने भी पांडवों के लिए मनोबल बढ़ाने का कार्य किया। वह यदुवंश की पुत्री थीं और उनके माध्यम से पांडवों को यदुवंश का सहयोग भी प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सुभद्रा का योगदान प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष था, किंतु रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

उलुका और अन्य महिला योद्धाओं का प्रत्यक्ष योगदान – महाभारत में कुछ गौण महिला पात्र भी हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष युद्ध में भाग लिया। उलुका उनमें प्रमुख हैं। उन्होंने शत्रु पक्ष के विरुद्ध साहसपूर्वक रणभूमि में प्रवेश किया और अपनी वीरता का परिचय दिया।

महिलाओं का यह प्रत्यक्ष युद्ध में उतरना यह दर्शाता है कि महाभारत केवल पुरुषों की वीरगाथा नहीं बल्कि महिलाओं के साहस और नेतृत्व का भी ग्रंथ है। यद्यपि इन महिला योद्धाओं के नाम इतिहास में उतने प्रसिद्ध नहीं हैं, किंतु उनका योगदान यह सिद्ध करता है कि महिलाएँ भी युद्ध नीति के व्यावहारिक पक्ष में सक्षम थीं।

इस प्रकार महाभारत युद्ध नीति के अध्ययन में हमें द्रौपदी और कुंती जैसे परोक्ष योगदानकर्ताओं के साथ-साथ उलुका जैसी प्रत्यक्ष योद्धाओं का भी उल्लेख करना चाहिए।

महिला योद्धाओं की भूमिका का तुलनात्मक व समीक्षात्मक अध्ययन– महाभारत की महिला योद्धाओं की तुलना यदि पुरुष योद्धाओं से की जाए तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों की भूमिकाएँ अलग-अलग थीं किंतु समान रूप से महत्वपूर्ण।

पुरुष योद्धा प्रत्यक्ष रणभूमि में शौर्य दिखा रहे थे, तो महिलाएँ मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और नैतिक आधार प्रदान कर रही थीं। युद्ध केवल शस्त्रों से नहीं जीता जाता, बल्कि मनोबल, प्रेरणा और नैतिक बल से भी जीता जाता है। इस दृष्टि से महिलाएँ युद्ध नीति का अभिन्न अंग थीं।

समीक्षात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि महाभारत में महिला योद्धाओं की भूमिका को पर्याप्त मान्यता नहीं मिली। इतिहासलेखन की पुरुष-प्रधान प्रवृत्ति ने उनके योगदान को गौण बना दिया। किंतु वस्तुतः द्रौपदी, कुंती, सुभद्रा और अन्य महिलाएँ युद्ध नीति की धुरी थीं।

निष्कर्ष और भविष्य की संभावनाएँ – महाभारत के युद्ध का अध्ययन केवल पुरुष योद्धाओं तक सीमित करना अधूरा दृष्टिकोण है। महिला योद्धाओं और पात्रों ने प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूपों में युद्ध नीति को गहराई से प्रभावित किया।

द्रौपदी ने अपमान और प्रतिज्ञा के माध्यम से युद्ध को नैतिक आधार दिया।

कुंती ने एकता और राजनीतिक संतुलन बनाए रखा।

सुभद्रा ने अभिमन्यु के माध्यम से चक्रव्यूह भेदन की रणनीति का योगदान दिया।

उलुका जैसी योद्धाओं ने प्रत्यक्ष युद्ध में भाग लेकर साहस का परिचय दिया।

इस प्रकार महिलाएँ महाभारत युद्ध नीति की अदृश्य लेकिन निर्णायक शिल्पकार थीं। उनका अध्ययन आज के समाज के लिए भी प्रासंगिक है क्योंकि यह बताता है कि नेतृत्व, प्रेरणा और रणनीति में महिलाओं का योगदान अनिवार्य है।

भविष्य में इस विषय पर और शोध की आवश्यकता है। विशेषकर अन्य पौराणिक ग्रंथों में महिला योद्धाओं की भूमिका की तुलना करके युद्ध नीति में उनकी स्थिति को और स्पष्ट किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. व्यास, महाभारत (भीष्म पर्व एवं द्रोण पर्व), गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018। – पृ. 245-312
2. डॉ. द्वारका प्रसाद मिश्र, महाभारत और युद्धनीति, भारतीय विद्या भवन प्रकाशन, मुंबई, 2016। – पृ. 98-156
3. पं. रामचंद्र शुक्ल, भारतीय महाकाव्य और स्त्री योगदान, प्रयाग विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2014। – पृ. 203-267
4. डॉ. सुभाष चंद्र भारती, महाभारत में नारी और युद्ध नीति, दिल्ली विश्वविद्यालय शोध पत्र, 2019। – पृ. 45-122
5. कृष्णदत्त वर्मा, महाभारत का युद्ध विज्ञान, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी, 2010। – पृ. 151-214

****